दिनांक : 10 मार्च, 2014

पुण्य का पाप से मिलन

-अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

2014 के आम चुनावों की तैयारी में पिछले चौबीस घंटे ढेर सारी घटनाओं से भरे रहे। भाजपा के आसपास जमावड़ा जारी है। गोरखा जनमुक्ति मोर्चा ने दार्जिलिंग और उत्तरी बंगाल के कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में भाजपा को समर्थन देने का फैसला किया है। उसके समर्थन से भाजपा के विजयी होने की संभावना और बढ़ गई है। बंगाल में कुछ सीटें निकालने की संभावना अब असलियत दिखती है। इसी तरह असम गण परिषद के पूर्व अध्यक्ष चन्दर मोहन पटवारी के नेतृत्व में असम गण परिषद ने भाजपा में शामिल होने का फैसला किया है। यह अपेक्षित था कि भाजपा असम में लोक सभा की अनेक सीटों के लिए गंभीर दावेदार है। असम गण परिषद के असम में भाजपा में शामिल हो जाने से भाजपा और मजबूत होगी क्योंकि असम में यही एकमात्र कांग्रेस विरोधी दल है।

भाजपा को मजबूती प्रदान करने के लिए अनेक राज्यों में अन्य दलों को छोड़कर आने वाले कुछ लोगों के अलावा, आने वाले कुछ दिन तीन दक्षिणी राज्यों कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु में वर्तमान स्थिति में भाजपा और एनडीए को मजबूत बनाने के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण होंगे। इन घटनाक्रमों से भारत के पूर्वी और दक्षिणी भागों में भाजपा की ताकत बढ़ेगी जहां भाजपा मजबूत राजनैतिक पार्टी नहीं थी।

इसी तरह, कांग्रेस और आम आदमी पार्टी में भी एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम देखने को मिला। मध्य प्रदेश में भिंड से कांग्रेस के उम्मीदवार ने पार्टी का नामांकन खारिज करने के साथ भाजपा में शामिल होने का फैसला किया है। चंडीगढ़ एक अन्य महत्वपूर्ण केन्द्र है जहां एएपी बड़ा समर्थन मिलने का दावा करती है। चंडीगढ़ में उसकी उम्मीदवार ने पार्टी का नामांकन लौटाने का फैसला किया है क्योंकि उनके कार्यकर्ता उलट–पलट करने में लगे हुए हैं और उनका मानना है कि उनके निर्वाचन के लिए संगठनात्मक समर्थन की कमी है। बड़ी संख्या में लोग उस पार्टी की तरफ बढ़ रहे हैं जिसके बारे में वह समझते हैं कि वह संभावित विजेता है। पार्टी के ऐसे बहुत कम दावेदार हैं जिनके हारने की संभावना है। किसी उम्मीदवार की सार्वजनिक घोषणा होने के बाद उसके द्वारा पार्टी का नामांकन अस्वीकार कर देना बेमिसाल घटना है। ऐसा तभी होता है जब उम्मीदवार को जीतने की संभावना नहीं दिखाई दे रही हो।

आम आदमी पार्टी का मीडिया के साथ हनीमून खत्म होता दिखाई दे रहा है। हांलाकि मीडिया पार्टी की गतिविधियों की विस्तार से खबर देता रहा है लेकिन अब वह अन्य राजनैतिक दलों की तरह इसकी भी गंभीरता से तहकीकात करने को तैयार है। मीडिया के एएपी को बहुत अधिक कवरेज देने के कारण वह भाजपा की 'टेलीविजन विरोधी' बन गई जबकि 'मैदान में उसकी विरोधी' कांग्रेस बनी हुई है। एक दिलचस्प वीडियो यू ट्यूब में डाला गया है। इस वीडियो में दिखाया गया है कि एएपी के अध्यक्ष एक प्रमुख न्यूज चैनल के एंकर के साथ इंटरव्यू के बाद गहन विचार–विमर्श में लगे हुए हैं। दोनों इंटरव्यू के संभावित असर और संपादन के बारे में बातचीत कर रहे हैं। वे योजना बना रहे हैं कि किन हिस्सों को उजागर करना है और ऐसे कौनसे हिस्सों को दबाना है जिनसे मध्यम वर्ग का समर्थन मिलने में नुकसान होता हो। हम कभी इतने भाग्यशाली नहीं रहे कि किसी एंकर या मीडिया संगठन ने हमें इस तरह की विशेष सुविधा दी हो। एक खास छवि बनाने के इरादे से अनुकूल और कपटपूर्ण इंटरव्यू एएपी की कूटनीति का हिस्सा हैं। इससे स्पष्ट है कि पार्टी और उसके नेता उस चीज को दिखाने की कोशिश कर रहे हैं जो है ही नहीं। वे खुद की ऐसी छवि दिखा रहे हैं जो काल्पनिक है। वास्तविकता और झुकाव के बीच कोई मेल नहीं है। जब पुण्य पाप से मिलता है तो आप साजिश की उम्मीद नहीं कर सकते।

★★★★★